कविता

बच्चे नहीं होते सिर्फ़ कोरी स्लेट*

रामगोपाल रैकवार

बच्चे नहीं होते सिर्फ़ कोरी स्लेट
कि उन पर कुछ भी लिखा जाए
न ही गीली मिट्टी
कि उन्हें कैसा भी आकार दिया जा सके
कच्चे घड़े भी नहीं होते बच्चे
कि उन्हें अंदर सहारा देकर,
बाहर से पीटा जाए
बच्चे महज़ बच्चे नहीं होते
बच्चे भेड़-बकरी नहीं होते हैं
कि उन्हें जब चाहे जैसा चाहे,
हाँक दिया जाए
भेड़चाल भी नहीं चलते बच्चे
वे अपने रास्ते खुद बनाते हैं
बच्चों को बनाएँ नहीं
वे जो बनना चाहते हैं,
वह बनने में सिर्फ़ उनकी मदद करें
कोई भी बच्चा,
कभी भी बुरा नहीं बनना चाहता
बच्चों को बुरा बड़े बनाते हैं
यह सच है कि बच्चे दिल के सच्चे होते हैं
पर तब तक
जब तक हम उन्हें झूठ बोलना नहीं सिखा देते
यह भी सच है बच्चे भी झूठ बोलते हैं
जब उन्हें सच बोलने पर सज़ा दी जाती है
बच्चों को कुछ सिखाना है
तो उसे करके दिखाएँ
बच्चे हमसे यही रखते हैं अपेक्षा
हम बच्चों से कुछ अपेक्षा रखें?
इससे पहले उनकी अपेक्षा पर खरे उतरें
क्योंकि, बच्चे महज़ 'बच्चे' नहीं होते।

---

* राज्य शिक्षा केंद्र, मध्य प्रदेश, भोपाल द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिका ***पलाश***, अप्रैल-मई 2006 से साभार